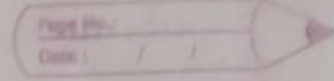


01-10-2020

संस्कृतसामान्यम् ।

अनिवार्यप्रथमपत्रम् ।

उपशास्त्री II



शब्दरूपाणि ।

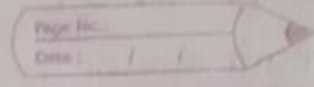
विदुश्च (विद्वान्, हलन्त, पुल्लिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	विद्वान्	विद्वान्शौ	विद्वान्सः
द्वितीया	विद्वान्सम्	»	विद्वान्सः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	»	विद्वद्भिः
पञ्चमी	विदुषः	»	»
षष्ठी	»	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	»	विद्वत्सु
सम्बोधनम्	हे विद्वन् !	हे विद्वान्शौ !	हे विद्वान्सः !

01-10-2020

डॉ० निर्मल कुमार झा (सं० प्राचार्य)
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ ।

संस्कृतसामान्यम् । उपशास्त्री ।
अनिवार्यप्रथमपत्रम् ।



शब्दरूपाणि

लता शब्द (आकारान्त, स्त्रीलिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा -	लता	लते	लताः
द्वितीया -	लताम्	॥	॥
तृतीया -	लतया	लताभ्याम्	लतानिः
चतुर्थी -	लतार्यै	॥	लतान्यः
पञ्चमी -	लतायाः	॥	॥
षष्ठी -	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी -	लतायाम्	॥	लतासु
सम्बोधनम् -	हे लते !	हे लते !	हे लताः !

अन्य सभी आकारान्त, स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप (जैसे - गीता, गीता, सीता, उमा, चंमुना, आज्ञा, भाषा, कविता, सभा, बालिका, रमा, कृपा, पूजा, वसुधा, सुधा आदि) लता के समान होंगे।
अम्बा शब्द का सम्बोधन, एकवचन में हे अम्ब ! रूप बनेगा।

01-10-2020

डॉ० निर्मल कुमार झा (सह प्राचार्य)
रा० ३० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ।

साहित्यम् ।

शास्त्री

Page No.

Date

द्वन्द्वविचारः ।उद्गता द्वन्द्व →

"सजमादिमे सलघुको च ।"

प्रथम-चरण में सगण, जगण, खगण तथा एक लघु क्रम से हों।

प्रथम-चरण में कुल दस अक्षर (वर्ण) होते हैं।

"नसजगुरुकैरथोद्गता ॥"

दूसरे-चरण में क्रमशः नगण, सगण, जगण तथा एक गुरु हों।

दूसरे-चरण में भी कुल दस अक्षर होते हैं।

"थडिद्गगतमनजला ग युताः ॥"

तीसरे-चरण में क्रमशः मगण, नगण, जगण, एक लघु तथा

एक गुरु यानि कुल ग्यारह वर्ण होते हैं।

"सजसा जगौ चरणमेकतः पठेत् ॥"

चौथे-चरण में क्रमशः खगण, जगण, सगण, जगण तथा

एक गुरु यानि कुल तेरह वर्ण (अक्षर) होते हैं।

यह उद्गता द्वन्द्व का लक्षण है।

इस द्वन्द्व में प्रथम दो-चरणों को मिलाकर पढ़ा जाता है यानि

द्वितीय-चरण के अंत में यति तथा चौथे-चरण के अंत में

तीसरे-चरण के भी अंत में यति होती है।

उदाहरण → "मृगलोचना शशिमुखी च

रुचिरदशना नितम्बिनी ।

हंसललितगमना ललना ,

परिणीयते यदि भवत्कुलोद्गता ॥"

भारवि / किरातार्जुनीयम् - 12 सर्ग 1 श्लोक ।

01-10-2020

डॉ० निर्मल कुमार झा (सब प्राचार्य) ,
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ ।